१-शैलपुत्री

वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्॥

माँ दुर्गा अपने पहले स्वरूपमें 'शैलपुत्री'के नामसे जानी जाती हैं। पर्वतराज हिमालयके वहाँ पुत्रीके रूपमें उत्पन्न होनेके कारण इनका यह 'शैलपुत्री' नाम पड़ा था। वृषभ-स्थिता इन माताजीके दाहिने हाथमें त्रिशूल और बायें हाथमें कमल-पुष्प सुशोभित है। यही नव दुर्गाओंमें प्रथम दुर्गा हैं।

अपने पूर्वजन्ममें ये प्रजापति दक्षकी कन्याके रूपमें उत्पन्न हुई थीं। तब इनका नाम 'सती' था। इनका विवाह भगवान् शङ्करजीसे हुआ था। एक बार प्रजापति दक्षने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया। इसमें उन्होंने सारे देवताओंको अपना-अपना यज्ञ-भाग प्राप्त करनेके लिये निमन्त्रित किया। किन्तु शङ्करजीको उन्होंने इस यज्ञमें निमन्त्रित नहीं किया। सतीने जब सुना कि हमारे पिता एक अत्यन्त विशाल यज्ञका अनुष्ठान कर रहे हैं, तब वहाँ जानेके लिये उनका मन विकल हो उठा। अपनी यह इच्छा उन्होंने शङ्करजीको बतायी। सारी बातोंपर विचार करनेके बाद उन्होंने कहा—"प्रजापति दक्ष किसी कारणवश हमसे रुष्ट हैं। अपने यज्ञमें उन्होंने सारे देवताओंको निमन्त्रित किया है। उनके यज्ञ-भाग भी उन्हें समर्पित किये हैं, किन्तु हमें जान-बूझकर नहीं बुलाया है। कोई सूचनातक नहीं भेजी है। ऐसी स्थितिमें तुम्हारा वहाँ जाना किसी प्रकार भी श्रेयस्कर नहीं होगा।" शङ्करजीके इस उपदेशसे सतीका प्रबोध नहीं हुआ। पिताका यज्ञ देखने, वहाँ जाकर माता और बहनोंसे मिलनेकी उनकी व्यग्रता किसी प्रकार भी कम न हो सकी। उनका प्रबल आग्रह देखकर भगवान् शङ्करजीने उन्हें वहाँ जानेकी अनुमति दे दी।

सतीने पिताके घर पहुँचकर देखा कि कोई भी उनसे आदर और प्रेमके साथ बात-चीत नहीं कर रहा है। सारे लोग मुँह फेरे हुए हैं। केवल उनकी माताने स्नेहसे उन्हें गले लगाया। बहनोंकी बातोंमें व्यंग्य और उपहासके भाव भरे हुए थे। परिजनोंके इस व्यवहारसे उनके मनको बहुत क्लेश पहुँचा। उन्होंने यह भी देखा कि वहाँ चतुर्दिक् भगवान् शङ्करजीके प्रति तिरस्कारका भाव भरा हुआ है। दक्षने उनके प्रति कुछ अपमानजनक वचन भी कहे। यह सब देखकर सतीका हृदय क्षोभ, ग्लानि और क्रोधसे सन्तप्त हो उठा। उन्होंने सोचा भगवान् शङ्करजीकी बात न मान, यहाँ आकर मैंने बहुत बड़ी गलती की है।

वह अपने पति भगवान् शङ्करके इस अपमानको सह न सकीं। उन्होंने अपने उस रूपको तत्क्षण वहीं योगाग्निद्वारा जलाकर भस्म कर दिया। वज्रपातके समान इस दारुण-दुःखद घटनाको सुनकर शङ्करजीने क्रुद्ध हो अपने गणोंको भेजकर दक्षके उस यज्ञका पूर्णतः विध्वंस करा दिया।

सतीने योगाग्निद्वारा अपने शरीरको भस्मकर अगले जन्ममें शैलराज हिमालयकी पुत्रीके रूपमें जन्म लिया। इस बार वह 'शैलपुत्री' नामसे विख्यात हुईं। पार्वती, हैमवती भी उन्हींके नाम हैं। उपनिषद्की एक कथाके अनुसार इन्हींने हैमवती स्वरूपसे देवताओंका गर्व-भंजन किया था।

'शैलपुत्री' देवीका विवाह भी शङ्करजीसे ही हुआ। पूर्वजन्मकी भाँति इस जन्ममें भी वह शिवजीकी अर्द्धांगिनी बनीं। नव दुर्गाओंमें प्रथम शैलपुत्री दुर्गाका महत्त्व और शक्तियाँ अनन्त हैं। नवरात्र-पूजनमें प्रथम दिवस इन्हींकी पूजा और उपासना की जाती है। इस प्रथम दिनकी उपासनामें योगी अपने मनको 'मूलाधार' चक्रमें स्थित करते हैं। यहींसे उनकी योगसाधनाका प्रारम्भ होता है।

९-सिद्धिदात्री

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि ।
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी॥

माँ दुर्गाजीकी नवीं शक्तिका नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकारकी सिद्धियोंको देनेवाली हैं। मार्कण्डेयपुराणके अनुसार अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व—ये आठ सिद्धियाँ होती हैं। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणके श्रीकृष्ण-जन्मखण्डमें यह संख्या अट्ठारह बतायी गयी है। इनके नाम इस प्रकार हैं—

१-अणिमा	७-सर्वकामावसायिता	१३-सृष्टि
२-लघिमा	८-सर्वज्ञत्व	१४-संहारकरणसामर्थ्य
३-प्राप्ति	९-दूरश्रवण	१५-अमरत्व
४-प्राकाम्य	१०-परकायप्रवेशन	१६-सर्वन्यायकत्व
५-महिमा	११-वाक्सिद्धि	१७-भावना
६-ईशित्व, वाशित्व	१२-कल्पवृक्षत्व	१८-सिद्धि

माँ सिद्धिदात्री भक्तों और साधकोंको ये सभी सिद्धियाँ प्रदान करनेमें समर्थ हैं। देवीपुराणके अनुसार भगवान् शिवने इनकी कृपासे ही इन सिद्धियोंको प्राप्त किया था। इनकी अनुकम्पासे ही भगवान् शिवका आधा शरीर देवीका हुआ था। इसी कारण वह लोकमें 'अर्द्धनारीश्वर' नामसे प्रसिद्ध हुए। माँ सिद्धिदात्री चार भुजाओंवाली हैं। इनका वाहन सिंह है। ये कमल पुष्पपर भी आसीन होती हैं। इनकी दाहिनी तरफके नीचेवाले हाथमें चक्र, ऊपरवाले हाथमें गदा तथा बायीं तरफके नीचेवाले हाथमें शङ्ख और ऊपरवाले हाथमें कमलपुष्प है। नवरात्र-पूजनके नवें दिन इनकी उपासना की जाती है। इस दिन शास्त्रीय विधि-विधान और पूर्ण निष्ठाके साथ साधना करनेवाले साधकको सभी सिद्धियोंकी प्राप्ति हो जाती है। सृष्टिमें कुछ भी उसके लिये अगम्य नहीं रह जाता। ब्रह्माण्डपर पूर्ण विजय प्राप्त करनेकी सामर्थ्य उसमें आ जाती है।

प्रत्येक मनुष्यका यह कर्त्तव्य है कि वह माँ सिद्धिदात्रीकी कृपा प्राप्त करनेका निरन्तर प्रयत्न करे। उनकी आराधनाकी ओर अग्रसर हो। इनकी कृपासे अनन्त दुःखरूप संसारसे निर्लिप्त रहकर सारे सुखोंका भोग करता हुआ वह मोक्षको प्राप्त कर सकता है।

नव दुर्गाओंमें माँ सिद्धिदात्री अन्तिम हैं। अन्य आठ दुर्गाओंकी पूजा-उपासना शास्त्रीय विधि-विधानके अनुसार करते हुए भक्त दुर्गा-पूजाके नवें दिन इनकी उपासनामें प्रवृत्त होते हैं। इन सिद्धिदात्री माँकी उपासना पूर्ण कर लेनेके बाद भक्तों और साधकोंकी लौकिक-पारलौकिक सभी प्रकारकी कामनाओंकी पूर्ति हो जाती है। लेकिन सिद्धिदात्री माँके कृपापात्र भक्तके भीतर कोई ऐसी कामना शेष बचती ही नहीं है, जिसे वह पूर्ण करना चाहे। वह सभी सांसारिक इच्छाओं, आवश्यकताओं और स्पृहाओंसे ऊपर उठकर मानसिकरूपसे माँ भगवतीके दिव्य लोकोंमें विचरण करता हुआ उनके कृपा-रस-पीयूषका निरन्तर पान करता हुआ, विषय-भोग-शून्य हो जाता है। माँ भगवतीका परम सान्निध्य ही उसका सर्वस्व हो जाता है। इस परम पदको पानेके बाद उसे अन्य किसी भी वस्तुकी आवश्यकता नहीं रह जाती।

माँके चरणोंका यह सान्निध्य प्राप्त करनेके लिये हमें निरन्तर नियमनिष्ठ रहकर उनकी उपासना करनी चाहिये। माँ भगवतीका स्मरण, ध्यान, पूजन हमें इस संसारकी असारताका बोध कराते हुए वास्तविक परमशान्तिदायक अमृत पदकी ओर ले जानेवाला है।